BA Part II (H)
Paper III

Dr. Chiranjeev Kumar Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

जनजाति (Tribes) => 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में जनजातियों की जनसंख्या 10.43 करोड़ है। जनजाति जनसंख्या देश की कुल आबादी की 8.6% है। जनजाति पूरे भारत वर्ष में फैले हुए हैं। भौगोलिक स्थिति को देखते हुए भारत की जनजातियों को पांच भागों में विभाजित किया जा सकता है -

1) पूर्वोत्तर क्षेत्र - इस क्षेत्र में लिम्बू, लेपचा, आका, दपला अबस्मीरी, राभा, गारो, खासी, नागा, कुकी, चकमा लूसाई, गुरुङ आदि प्रमुख जनजातियां है।

2) मध्य क्षेत्र - इस क्षेत्र में गोंड, कोंध, खड़िया, उरांव मुंडा, संथाल, हो, बिरहोर, आदि।

3) दक्षिण क्षेत्र - इस क्षेत्र में चेन्चू, टोडा, चेरियां कादर, कणीदर, कुरावन आदि।

4) पश्चिम क्षेत्र → इस क्षेत्र में भील प्रमुख जनजाति है।

5) द्वीप समूह क्षेत्र → अंडमानी, जरवा, सेंटीनल एवं ओंगी जनजाति प्रमुख है।

साधारणतया जनजाति का अर्थ एक ऐसे मानव-समूह से समझा लिया जाता है जिसकी संस्कृति, परम्परा और रीति रिवाज आदिम विशेषताओं वाले होते हैं। विभिन्न विद्वानों ने जनजाति को परिभाषित किया है, जो इस प्रकार है –

डी. एन मजूमदार (Races and culture of India) के अनुसार " जनजाति परिवारों का एक ऐसा समूह है जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक निश्चित क्षेत्र में निवास करते हैं, एक सामान्य भाषा बोलते हैं तथा विवाह और व्यवसाय के विषय में कुछ विशेष नियमों का पालन करते हैं।

राल्फ पिडिंगटन (An Introduction to Social Anthropology) के अनुसार " जनजाति को व्यक्तियों के एक ऐसे समुदाय के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है, जो एकसमान भाषा बोलता हो, समान भू-भाग में निवास करता हो तथा जिसकी संस्कृति में समानता पायी जाती हो।"

गिलिन और गिलिन (Cultural Sociology) => जनजाति उन विभिन्न समूहों से बनने वाला एक बड़ा समुदाय है जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करता है, एक सामान्य भाषा का प्रयोग करता है तथा जिसकी एक सामान्य संस्कृति होती है।"

अतः स्पष्ट है कि जनजाति एक अन्तर्विवाही और क्षेत्रीय समूह है जिसके सदस्य भू-भाग, भाषा, संस्कृति, धार्मिक विश्वासों और व्यवसाय की समानता के कारण अपनी अलग पहचान बनाये हुए हैं।

विशेषताएं ⇒ जनजाति की प्रकृति के आधार पर कुछ विशेषताओं द्वारा समझा जा सकता है। जो इस प्रकार है —

① क्षेत्रीय समूह - जनजाति एक निश्चित भू-भाग में निवास करते हैं और उसका अपना एक क्षेत्रीय समूह होता है। आजीविका के लिए जनजाति कभी-कभी अपना स्थान परिवर्तित करते हैं, परन्तु फिर भी उनका एक निश्चित भू-भाग होता है।

② समान भाषा ⇒ जनजातियों की अपनी एक समान भाषा होती है। उस समूह में लोग इसी समान भाषा का प्रयोग करते हैं तथा पीढ़ी-दर पीढ़ी यह भाषा ~~इस्तांतरित~~ हस्तान्तरित होती रही है।

③ विस्तृत आकार - अनेक क्षेत्रीय समूहों की तुलना में जनजाति एक विस्तृत आकार वाले मानव समूह होते हैं।

(4) अन्तर्विवाही समूह ⇒ ये अन्तर्विवाही समूह होते है। प्रत्येक जनजाति के सदस्यों को केवल अपनी जनजाति के अन्दर ही विवाह-सम्बन्ध स्थापित करना अनिवार्य होता है। इससे जनजाति की बाहरी समूहों से पृथकता बनी रहती है।

(5) सामान्य संस्कृति ⇒ प्रत्येक जनजाति समूह की एक सामान्य संस्कृति होती है। प्रत्येक सदस्यों को अपनी संस्कृति के नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है। जनजाति के मुखिया का कार्य अपनी सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ बनाये रखना होता है।

(6) आत्मनिर्भरता ⇒ एक जनजाति के सभी सदस्य अपनी सभी आवश्यकताएं अपने समूह में ही पूरी कर लेते है। जनजाति आजीविका उपार्जित के लिए स्वयं आत्मनिर्भर होते है।

(7) एक राजनीतिक इकाई ⇒ अपनी परम्परागत संस्कृति के अनुसार अधिकांश जनजातियों में एक स्वतंत्र राजनीतिक संगठन देखने को मिलता है। प्रत्येक जनजाति में मुखिया तथा पंचायत द्वारा सदस्यों के व्यवहारों पर नियंत्रण रखा जाता है।